इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ०) की शहादत

वक़ार मोहसिन आबिदी साहब

हज़रत इमाम मो0 बाक़िर (अ0) हज़रत मो0 मुस्तफ़ा (स0) के पांचवें जा नशीन और हमारे पांचवे इमाम सिलल्लिः–ए–इस्मत की साँतवीं कड़ी थे। आपके वालिदे माजिद सय्यदुस्साजिदीन इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ0)थे। वालिद–ए–माजिदा उम्मे अब्दुल्लाह फ़ातिमा बिन्ते हज़रत इमाम हसन (अ0) थी। उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि आप बाप और माँ दोनों की तरफ़ से अलवी और फ़ातिमी नजीबुत्तरफ़ैन हाशिमी थे। नसब का यह शरफ किसी को भी नहीं मिला। आप हमारे सभी इमामों की तरह से मासूम थे और सभी फ़ज़ीलतों के मालिक थे। आपकी विलादत यकुम रजब सन 57 हि0 यौमे जुमआ मदीन–ए–मुनव्वरा में हुई। आपकी कुन्नीयत अबुजाफ़र थी। मशहूर आप बाक़िर, हादी से थे।

आपके वक़्ते पैदाइश से लेकर आख़िरे हयात तक कई बादशाह गुज़रे मगर आप के इमामत पर फायिज़ होते वक़्त सन 15 में वलीद–बिन–अब्दुल मलिक के बाद सुलेमान–बिन–अब्दुल मलिक, अम्र बिन अब्दुल अज़ीज़, यज़ीद बिन अजुल मालिक और हिशाम बिन अब्दुलाह बादशााहाने वक़्त गुज़रे। वाकिय–ए–करबला में आप की उम्र 4 साल थी। आपने अब्दुल मालिक के वक़्त में ही दिरहम व दीनार के सिक्के ढलवाये। और इन सिक्कों को तमाम इस्लामी मुल्कों में रायिज करवा दिया और जो रूमी सिक्का चल रहा था उसे टिकसाल बाहर क़रार दिया।

जब आपकी उम्र तक़रीबन 38 साल की थी तब वलीद बिन अब्दुल मलिक ने आपके वालिदे माजिद को ज़हरे दग़ा से शहीद कर दिया। आपको आपके वालिद ने शहादत के वक़्त अपने बाद अपना वसी मुर्क़रर फ़र्माया।हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) चूंकि इमामें ज़माना और मासूमे अज़ली थे। इसलिये आपके इल्मी कारनामों और आपकी इल्मी हैसियत की वज़ाहत ना मुमकिन है।

आप अपने आबा व अज्दाद की तरह बे पनाह इबादत करते थे। सारी रात नमाज़ पढ़ते और सारा दिन रोज़े से गुज़रता था। आप बहुत ही ज़ाहिदाना ज़िन्दगी के मालिक थे। गरीबों में फ़कीरों में हदये को तक़्सीम कर देते थे।

अल्लामा मजलिसी लिखते है कि हिशाम बिन अब्दुल मलिक अपने अहदे हकूमत के आख़िरी अय्याम में हज्जे बैतुल्लाह के लिये मक्क–ए–मुअज़्ज़मा पहुंचा। वहां हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) और हज़रत इमाम जाफ़र सादिक (अ0) मौजूद थे। एक दिन हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ0) ने लोगों के बीच में एक ख़ुत्बा इरशाद फ़र्माया जिसकी ख़बर हिशाम को मिली वह वहां तो खामोश रहा दमिशक पहुंचा और वालि–ए–मदीना को ख़त लिखा कि मुहम्मद बिन अली और जाफ़र बिन मोहम्मद को मेरे पास भेज दो जब आप हज़रात दमिशक पहुंचे तो वहां हिशाम ने आपसे तीन रोज़ तक मुलाकात नहीं की। आख़री रोज़ जब दरबार सज गया तो आपको बुलवा लिया।

आप जब दाख़िले दरबार हुवे तो आपको मुआज़ल्लाह खफ़ीफ़ करने के लिये, आपसे कहा कि हमारे तीरअंदाज़ों की तरह, आप भी तीरअंदज़ी करें। हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) ने फ़र्माया मैं ज़ईफ हो गया हूं। मुझे इस से मुआफ कर। उसने बक़सम कहा यह नामुम्किन

है। एक तीर और कमान आपको दिलवा दी गयी। आपने तीर ठीक निशाने पर लगाया। यह देख कर वह हैरान हो गया। हिशाम ने अहले दरबार को हुक्म दिया था कि मैं मुहम्मद बिन अली (इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0) को सरे दरबार ज़लील करूंगा। तुम लोग यह करना कि जब मैं खामोश हो जाऊँ तो उन्हें कालिमाते नाशायिस्ता कहना। चुनाँचे ऐसा ही किया गया। आखिर में हज़रत ने फ़रमाया "बादशाह! याद रख हम ज़लील करने से ज़लील नहीं हो सकते, ख़ुदा बन्दे आलम ने हमें जो अिज़्ज़त दी है। उसमें दम मुनफरिद है"। चुनाँचे आपको कैद कर दिया गया।

अल्लामा मजलिसी तहरीर फर्माते है कि हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) क़ैद खाने से रिहा हो कर मदीने को तशरीफ ले जा रहे थे राह में कसीर मजमा नज़र आया। आपने हाल मालूम किया तो पता चला कि नसारा का एक राहिब है जो साल में सिर्फ एक बार अपने माबद से निकलता है।

आज उसके निकलने का दिन है। हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) उस मजमे में बैठ गये। राहिब जो बहुत ज़अीफ थे अपने मुकर्रर वक़्त पर निकलता और चारों तरफ निगाह दौड़ाई फिर इमाम से मुतवज्जेह हुवे और आपसे सवाल पूछा जिसका जवाब इमाम ने दिया।

जवाब सुनकर राहिब अपने मानने वालों की तरफ मुड़ा और कहने लगा "यह शख़्स शाम के हदूद में मौजूद है मैं किसी के सवाल का जवाब न दूंगा सब को चाहिये कि इस आलिमे ज़माना से सवाल करें"। इसके बाद वह मुसलमान हो गया।

आपके इल्म की वजह से पूरा इस्लाम तेज़ी से बढ़ रहा था। इसके बावजूद हिशाम बिन–अब्दुल मलिक ने आप को ज़हर के ज़रीअे शहीद करा दिया। और आप बतारीख 7 ज़िल हिज्जः सन 114 हि0 दोशम्बा मदीनः–ए–मुनव्वरा में शहीद हो गये। उस वक़्त आपकी उम्र 57 साल की थी। आप जन्नतुल बकीअ् में दफ़्न हुवे। आप अपने ज़द–ए–बुज़ुर्गवार की तरह ज़हर से शहीद कर दिये गये। रिवायतों में है कि आपकी शहादत खलीफ़ः–ए–बक़्त हिशाम बिन अब्दुल मलिक की मुरतलः ज़हर आलूद ज़ीन के ज़रीअे से वाक़े हुवी थी। शहादत से पहले आपने इमाम जाफर सादिक (अ0) से बहुत सी चीज़ों के मुतअल्लिक वसीयत फर्मायी।

आपने गुस्ल व कफन के मुतअल्लिक़ ख़ास तौर से हिदायत की क्योंकि इमाम को इमाम के सिवा कोई और गुस्ल नहीं दे सकता है। आपने अपनी वसीयत में यह भी कहा कि 800 दिरहम मेरी अज़ादारी और मेरे मातम पर सर्फ करना और ऐसा इन्तिज़ाम करना कि दस साल तक मिना में बज़मानः–ए–हज्ज मेरी मज़्लूमीयत मौत का मातम किया जाये। अपनी कब्र के मुतअल्लिक़ वसीयत की कि मेरे बन्दहा–ए–कफ़न कब्र में खोल देना और मेरी कब्र चार अुन्गल से ज़ियादा ऊंची न करना।

आपकी चार बीवियां थीं और उन्ही से औलाद हुई। अुम्मे फरवा उम्मे हकीम, लैला और एक और बीवी अुम्मे फरवा बिनते क़ासिम बिन मोहम्मद बिन अबीबक्र जिन से हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ0) और अब्दुल्लाह पैदा हुवे।

●●●

क़ुरआन पढ़ना चाहिए

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी

ख़ालिक़े मौतो हयाते आदमी का है कलाम
जीने वाले इसलिये क़ुरआन पढ़ना चाहिए
इसलिये भी क्योंकि फ़िल वाक़े है दस्तूरे हयात
ज़िन्दगी के वास्ते क़ुरआन पढ़ना चाहिए

●●●